एस. आर. हरनोट के कथा-साहित्य में पर्यावरण

डॉ. विशाल कुमार सिंह

आज हम 21वीं सदी के जिस दहलीज पर खड़े हैं वह 'डिजिटल' दुनिया के नाम से परिचित है। समय के साथ यह 'डिजिटल' दुनिया तेजी से बदल रही है। पूंजीवादी सभ्यता और नई उपभोक्तावादी संस्कृति ने इस 'डिजिटल' दुनिया को विशेष रूप से प्रभावित किया है। जिसे समझ पाना आसान नहीं है। क्योंकि इस नई उपभोक्तावादी संस्कृति ने जिस पॉवर सिफ्टिंग खेल को जन्म दिया है वह अत्यंत पेचीदा है। उसने मनुष्य के सामने एक मायावी भंवर जाल को निर्मित किया है जो हर क्षण मनुष्य को उसके वास्तविक यथार्थ से दूर कर रहा है। पाश्चात्य चिंतक बोद्रिया ने इस नई मायावी संस्कृति को 'हाईपर सिविलाइजेशन' नाम दिया है।

हमारा भारतीय समाज आज इस 'हाईपर सिविलाइजेशन' के चपेट में आकर उपभोग की नई संस्कृति और अवधारणा को पेश कर रहा है। जिसके चलते मनुष्य अपने आत्मा को खोकर जीने पर विवश हो रहा है। दूसरी तरफ प्रकृति से दूर होती जा रही मनुष्य जाति यंत्रों की दास्तान सहर्ष स्वीकार कर रहा है। हमारे समाज पर 'मास-कल्चर' हावी होती जा रही है। ऐसे में मनुष्य अर्थहीन, लक्षहीन होकर 'आत्मनिर्वासन' में भटक रहा है। मनुष्य को अजनबीपन, अकेलापन, परायापन तथा अमानवीयकरण जैसे स्थितियों ने जकड़ लिया है। समाज में उपभोग की संस्कृति इतनी शक्तिशाली हो गई है कि उसके सामने पर्यावरण, प्रकृति के मायने सब कुछ बदल से गए हैं। मनुष्य जिस हरी-भरी प्रकृति का अविभाज्य अंग है उस प्रकृति के प्रति मानव जाति का दृष्टिकोण धीरे-धीरे उदासीनता से परिपूर्ण हो रहा है। प्रकृति के प्रति ऐसा सौतेला व्यवहार मानव समाज के लिए कोई शुभ संकेत नहीं है। मनुष्य का यह अप्राकृतिक स्वभाव विभिन्न विषमताओं और विद्रूपताओं को लेकर विकसित हो रहा है जिसके फलस्वरूप ये प्राइवेट कंपनियां, बहुराष्ट्र कंपनियां, पूंजीवादी ताकतें, बुद्धिजीवी वर्ग के भ्रष्ट लोग और कुछ स्वार्थी नेता अपने हितों की रक्षा के लिए पर्यावरण का दोहन जोरों सोरों से कर रहे हैं। झूठी विकास के नाम पर पर्यावरण का दुरुपयोग कर केवल अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं। इस अनैतिकता के दलदल में हर कोई मौन, निस्पंद, चेतनाहीन हो कर डूब रहा है। साहित्य जो समाज में नैतिकता की रक्षा करता है, वह साहित्य भी इससे अछूता नहीं रहा है। उस पर भी उपभोक्ता वादी संस्कृति का खतरा मंडरा रहा है।

इसलिए कुछ कर्तव्यनिष्ठ साहित्यकार पर्यावरण जैसे सूक्ष्म और गंभीर विषय पर लिख कर पाठकों के द्वारा समाज में पर्यावरण संबंधी समस्याओं पर प्रकाश डालना चाहते हैं। उन विशिष्ट लेखकों में एस. आर. हरनोट का नाम अत्यंत महत्वपूर्ण है जिन्होंने अपनी कथा साहित्य में पर्यावरण जनित समस्याओं को मुख्य केंद्रबिंदु बनाया है। एस. आर. हरनोट के आधे से अधिक रचनाओं में पर्यावरण से जुड़ी स्थितियां वास्तविक यथार्थ के साथ उपस्थित हुई है। इस संदर्भ में उनकी चर्चित उपन्यास 'हिडिंब' को देखा जा सकता है। जिसका कथानक हमें एक नए लोक में प्रवेश कराती है, जिसका मुख्य विषय है पर्यावरण जनित समस्या।

हरनोट जी ने पर्यावरण जैसे ज्वलंत मुद्दे को अपने उपन्यास का विषय बड़े ही जीवंत और प्रतीकात्मक रूप में पेश किया है। उन्होंने हिडिंब का प्रतीकात्मक रूप धार्मिक चोगा पहने एक नेता के रूप में उभारा है जो आज के भ्रष्ट नेता का नंगा यथार्थ है। जिसका उदाहरण नेता के संवाद "मैं मंत्री ! नेताओं का नेता, मेरी टोपी में सभी समा गए हैं।... मैं जो चाहूं कर सकता हूं। सब कुछ मेरे वश में है।"[1] से पता चलता है। इसके अतिरिक्त इस उपन्यास में भौगोलिक परिवर्तन, प्रकृति का आक्रोश,

स्थानीय लोकगीत, भारतीय संस्कृति, दलित चेतना, आधुनिकता, पूंजीवादी संस्कृति और सबसे बड़ी बात प्रदूषण की चिंता भी है। हरनोट जी ने उपन्यास में केवल हिमाचल के पहाड़ों का विकास ही नहीं दिखाया है बल्कि उनके चिंता का मुख्य कारण विकास के लिए अपनाए गए अवैज्ञानिक उपाय हैं, क्योंकि पहाड़ों में डायनामाइट के भीषण विस्फोट एवं जंगलों की कटाई के कारण भू-स्खलन, बादलों का फटना तथा बाढ़ जैसी गंभीर प्राकृतिक विपदाएँ उत्पन्न हो रही है, जिसकी चिंता इस उपभोक्तावादी समाज को नहीं है। कहना न होगा कि वर्तमान समय में जो नयी पूंजीवादी एवं उपभोक्तावादी संस्कृति विकसित हो रही है उसमें पर्यावरण जनित चिताएँ हाशिए पर चली गई है। ऐसे में पर्यावरण पर बढते प्रदूषण के खतरों से पाठक वर्ग को परिचित करवाने एवं पर्यावरण संरक्षण में अपनी भागीदारी निभाने हेतु लेखक तत्पर हैं।

इसलिए हरनोट जी आधुनिक जीवन की विडंबना को समझते हुए पाठक वर्ग से यह आग्रह करते हैं कि वे प्रकृति के साहचर्य से वंचित न रहे। उपभोग की नयी संस्कृति और भौतिकवादी सुविधाओं के कारण मनुष्य प्रकृति से निरंतर दूरी न बनाये। किंतु दु:खद स्थिति यह है कि शहरों की चकाचौंध , पूंजी के बढते मुल्य और उच्च जीवन की तलाश में मनुष्य औद्योगिक क्षेत्रों की ओर आकर्षित हुआ। फलस्वरूप जंगल कटना प्रारम्भ हुआ। मनुष्य जाति का यह वर्वर रूप एवं प्रकृति के प्रति उसका यह स्वार्थपरक दृष्टिकोण हमें हरनोट जी की कहानी 'बेजूबां दोस्त' में दिखाई देता है। कहानी का प्लॉट पर्यावरण संबंधी चिंताओं से गति करता है। नायक किशन के माध्यम से लेखक यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि प्रकृति के अभाव में मनुष्य का आनंदमय जीवन अस्वभाविक है। कहानी अत्यंत अथार्थ परक, 21वी. सदी की ओर बढते मानवीय कदमों को इंगित करता हुआ, तत्कालीन समाज का ऐसा स्वरूप उभारता है जहाँ एक तरफ प्रकृति उपेक्षित है तो वहीं दूसरी तरफ औद्योगिक क्षेत्र का बढता हुआ प्रहाव नज़र आता है। कहानी में उपभोक्तावादी संस्कृति और आधुनिक औद्योगिक की विकास के लिए सिमैंट फैक्ट्री का निर्माण योजना दृष्टिगोचर होता है जिसके लिए स्थानिय जंगल की 700 पेड़ों को काटने की बात की जा रही है जो पर्यावरण प्रदूषण का मूल कारण है। विकास के नाम पर पेड़ों की कटाई का मुद्दा पूंजीपतियों के लिए कोई बहुत बड़ी घटना नहीं है। यह उनके साधारण जीवन और भद्दी राजनीति का हिस्सा है। परंतु इस भ्रष्ट राजनीति का कुप्रभाव सीधे पर्यावरण और उस पर्यावरण के इर्द-गिर्द रहने वाले मासूम जनसाधारणों पर पड़ रहा है। परंतु मनुष्य यह भुल रहा है कि प्रकृति स्वयं पर हुए अन्याय का न केवल विरोध करता है बल्कि अपना कहर विनाश के विकराल रूप में मनुष्य को लोटा भी देता है। नायक किशन जो एक संवेदनशील व्यक्ति है, पर्यावरण के प्रति सजगता का भाव रखता है, बेजुबान दोस्तों पशु पक्षियों के साथ बतीआता है, वह इन 700 पेड़ों को कटता हुआ चुप चाप देख नहीं पाता है। इसलिए वह इस निर्मम कृत्य को रोकने के लिए मन में निश्चय कर लेता है और अपने इस अभियान में पूरे गांववालों को एकजूट कर लेता है। इसप्रकार हरनोट जी की यह कहानी पाठकों को पर्यावरण प्रदूषण के खिलाफ आवाज उठाने के लिए प्रेरित करती है। साथ ही प्रकृति का मनमाने ढंग से दुरुपयोग करना, झुठी विकास का चादर ओढ़े पर्यावरण का दोहन करना, जंगलों की कटाई करना आदि मानवीय जीवन में अनेक विसंगतियाँ पैदा कर सकती है इस ओर भी इशारा करते हुए दिखायी देते हैं। हरनोट जी की एक ओर कहानी 'नदी गायव है' औद्योगिकी विकास के कारण प्रकृति से छेड़ छाड़ करती हुई नजर आती है। उनकी यह कहानी बहुचर्चित और प्रसिद्ध है। क्योंकि आकार में संक्षिप्त दिखने वाला यह कहानी अपने कलेवर में पर्यावरण के कुपरिणाम को समेटा हुआ है। जैसे कहानी में तीन बड़े प्राकृतिक संकटों की ओर ईशारा किया है। पहला-गांव में विजली बनाने की योजना से अनवरत बहने वाली नदी गायव हो जाती है। नदी का अस्तित्व समाप्त कर दिया जाता है। जिसके कारण गांव के लोग अत्यंत मर्माहत हो जाते है। क्योंकि उस "छोटी-सी नदी से कई गांवों की रोजी-रोटी चलती थी। इसके किनारे किसानों के क्यार थे, जिसमें वे धान, गेहूँ बीजते और सब्जियाँ उगाते। ...लेकिन आज तो

जैसे उन पर पाहाड़ ही टूट गया हो।"[2] दूसरा नदी गायव होने के अतिरिक्त उस गांव पर एक ओर भय मंडरा रहा था। क्योंकि वह "गांव ऐसे पर्वतों की तलहटी में था जहाँ ग्लेशियर के गिरने का खतरा हमेशा बना रहता था। अब रोज डायनामाइटों के धमाकों से टनों के हिसाव से उस नदी में चट्टाने गिरनी शुरू हो गये थे। सबसे ज्यादा खतरा टीकम के गांव को था। लोग जानते थे कि धमाकों के शोर से पाहाड़ पर सदियों से सोया ग्लेशियर जाग गया तो उनके गांव को लील लेगा।"[3] कहानी में तीसरे संकट के संबंध में हरनोट जी लिखते हैं "अब गांव के नीचे से एक सड़क भी निकल रही थी जिसकी खुदाई और ब्लास्टों से अनेक गांव के नीचे की पाहाड़ी धँसने लगी थी। कई बीघे जमीन तो धँस गई थी।"[4] जिसकी चिंता न गांव के प्रधान को है न ही वहां के सरकारी अफसरों और मंत्री महोदय के है। अत: उपर्युक्त संवादों से यह स्पष्ट होता है कि विकास के नाम पर बड़े-बड़े प्राइवेट कम्पनियाँ, भ्रष्ट नेता सब मिले हुए हैं और ये मुट्ठी भर लोग सत्ता का दुरुपयोग कर केवल अपनी अर्थ-लोलुपता को उन्नत कर रहें हैं एवं माँ समान प्रकृति को असंतुलित कर रहें हैं।

पर्यावरण से संबंधित हरनोट जी की एक ओर उत्कृष्ट कहानी 'आभी' जो सन् 2014 के कहानी संग्रह 'लिटन ब्लॉक गिर रहा है' में संग्रहित है, उसके संदर्भ में लेखक स्वयं कहते हैं "हिमाचल प्रदेश के जिला कुल्लू के दुर्गम आनी क्षेत्र में 11,500 फुट की ऊंचाई पर स्थित जलोरी के पास से लगभग 5 किलोमीटर दूर सरेऊलसर झील के जल को सदियों से 'आभी' नामक एक चिड़िया निर्मल रखे हुए है जो झील में किसी तरह का तिनका पड़ने पर उसे अपनी चोंच से उठाकर दूर फेंक देती है। चिड़िया के इस कारनामें को यहाँ आने वाले विदेशी तथा अन्य पर्यटक देखकर आश्चर्यचकित रह जाते हैं। ....यह कहानी उसी आभी के लिए।"5 वास्तव में हरनोट जी ने एक पक्षी के द्वारा पर्यावरण के प्रति जो संवेदना व्यक्त की है वह सराहनीय है। परंतु आभी जो केवक एक पक्षी है वह अब मनुष्य के अमानवीय व्यवहार से डरने लगी है। क्योंकि मनुष्य के फेलाए प्लास्टिक के लिफाफें, चिप्स के पैकेट और पानी की खाली बोतलें झील के निर्मल तहों पर कचरों का ढेर तैयार कर रही है जिसे आभी चाह कर भी अपनी चोंच से साफ नहीं कर सकती। मनुष्य के इन्हीं हरकतों से जंगल और पाहाड़ बर्बाद हो रहे हैं। गाड़ियों के शोर से न जाने जंगलों के कितने नन्हे-नन्हे परिंदे दम तोड़ रहे हैं। माफिया रात के घने अंधकार में जंगलों में देवदारू और कई मुल्यवान पेड़ों को काट कर उसकी तस्करी करते है, जंगली पशु-पक्षिओं का शिकार करते हैं। यह सब देख आभी जोरों से तड़पती है, चहचहाती है और पुन: अपने सफाइ के काम में जुट जाती है। लेखक इस कहानी के द्वारा मनुष्य का व्यवहार प्रकृति, पाहाड़, झील, जंगल आदि के प्रति कितना स्वार्थपरक, पाशविक, क्रूर और अमानुषिक हो गया है स्पष्ट किये हैं।

इसी कड़ी में हरनोट जी की अगली कहानी 'लोग नहीं जानते थे कि उनके पहाड़ खतरे में है' एक अलग भाव भूमि पर खड़ी पर्यावरण संबंधी कथानक को चित्रपट पर उकेरती है। हरनोट जी ने इस कहानी के मार्फत भूमंडलीकरण के कुचक्र में ध्वस्त हो रहे प्राकृतिक संपदाओं की प्रतिरक्षा के संबंध में कहा है। साथ ही उन्होंने पूंजीवादी संकल्पना का खंडन करते हुए यह स्पष्ट किया है कि "जो मनुष्य वर्ग चेतना से अनभिज्ञ है, जिसे क्रांति की समझ नहीं है जो पूंजीवादी हथकंडों में उलझा चुका है, जिसे जड़ता ने चौतरफा घेर रखा है उसे केवल आस्था और धर्म के सहारे ही वर्गीय चेतना समझायी जा सकती है। उसकी मनुष्यता का संस्कार किया जा सकता है।"6 कहने का आशय है कि समकालीन समय में भौतिकता की जगमगाहट में प्रकृति की वास्तविक चमक धूमिल हो गई है। भारतीय संस्कृति में जहाँ प्रकृति की पूजा की जाती थी कालांतर में वह प्रवृत्ति पतन की ओर अग्रसर हो रही है। ऐसे विषम परिस्थिति में अस्वच्छ और दूषित वातावरण को स्वच्छ करने के उदेश्य से हरनोट जी पर्यावरण संबंधी कथाओं को साहित्य का जामा पेहनाकर असंतुलित पर्यावरण को पुन: संतुलित करने की राह पर निकल पड़े हैं।

हिंदी कथा-साहित्य में पर्यावरण और जल-वायू प्रदुषण के संदर्भ में हमें अनेक रचनाएँ देखने को मिलती है किंतु भारत में पर्यावरण जनित बढते प्रदूषण के खतरे और उनके कु-प्रभाव से पाठक वर्ग को सचेत करवाने वाले लेखकों में एस.आर. हरनोट अप्रतिम है। उनकी रचनाओं में पर्यावरण चिंतन के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण के लिए जागरूकता का भाव भी सम्मिलित है। वर्तमान समय में जहाँ मनुष्य के पास पर्यावरणीय सजगता का अभाव है, प्रदूषण के दुष्परिणाम जटिल हो गये है, प्राकृतिक अवयवों का प्रदूषण स्तर बढ़ता जा रहा है, मनुष्य रोगग्रस्त हो रहे हैं, नदी, दरिया, झील की पानी जहरीली हो रही है, वन्य पशु-पक्षिओं का अस्तित्व समाप्त होने के कगार पर खड़ा है, ऐसे में लेखक दबे पाँव बिना रुखाई के संवेदनता के साथ नव युवकों को पर्यावरण संरक्षण के लिए तैयार कर रहे हैं। वास्तव में हरनोट जी की पर्यावरण धर्मिता दृष्टिकोण उन्हें अपने समसामयिक रचनाकारों से अलग बनाती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. एस.आर. हरनोट, हिडिम्ब, आधार प्रकाशन, पंचकूला, प्रकाशन वर्ष- 2011, पृष्ठ -232
2. वेव सामग्री - https://hindisamay.com
3. वेव सामग्री - http://hindisamay.com
4. वेव सामग्री - https://hindisamay.com
5. वेव सामग्री - http://pahleebar.blogspot.com/2014/02/blog-post_5.html?m=1
6. वेव सामग्री - http://pahleebar.blogspot.com/2014